संस्था की गतिविधियां एवं उपलब्धियां

(क) रं समाज में परस्पर तथा रं समुदाय के प्रति लोगों की प्रेम भावना को जगाना।

- धारचूला में प्रथम रं सम्मेलन (1993) तथा तदोपरान्त अविभाजित उत्तर प्रदेश संस्था मुख्यालय लखनऊ में समय–समय पर वार्षिक अधिवेशन का आयोजन और उत्तराखण्ड राज्य सृजन के उपरान्त (1999), देहरादून (2004, 2007, 2019 एवं 2020), हल्द्वानी (2005 एवं 2022), धारचूला (2006, 2008 एवं 2018), बरेली (2009 एवं 2023), पांगू (2010), पिथौरागढ़ (2011), दांतू (2012), लखनऊ (2013), गुंजी (2014), नई दिल्ली (2015), छांगरू (2016), अल्मोड़ा (2017) तथा माकम कैलाश, चौंदास (2024) में वार्षिक अधिवेशन/रं महोत्सव का भव्य आयोजन, जिसके फलस्वरूप जहां एक ओर रं समाज में एकजुटता, सौहार्द एवं सामाजिक समरसता में वृद्धि हुई और ब्यॉसी शौका समाज (नेपाल राष्ट्र) के साथ–साथ पातो–रंग्नम (रालिम) के रं जन से भी तादात्म्य स्थापित हुआ। दूसरी ओर रं समाज एवं रं क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के विषय में सार्थक चर्चा करते हुए अग्रेत्तर आवश्यक कार्यवाहियों को सम्पादित करने हेतु ठोस रणनीति तथा **'विजन : 2020'** जैसी परिकल्पना का भी निर्धारण संभव हुआ।
- पिथौरागढ़, हल्द्वानी, देहरादून, बरेली, लखनऊ एवं नई दिल्ली में सामुदायिक भवनों (रं मं बं/रं चिम) का निर्माण जहाँ रं–रंस्या को समय–समय पर सामुदायिक कार्यक्रम करने, निर्धन परिवारों को उपचार/अध्ययन/परीक्षा के निमित्त निःशुल्क प्रवास की सुविधा सुलभ हो रही है।
- संस्था के प्रयासों से विभिन्न स्थानों में सृजित सामुदायिक भवन (रं मं बं/रं चिम), संग्रहालय, छात्रावास, लाईब्रेरी आदि के शिलान्यास/उद्घाटन समारोह/स्थापना दिवस तथा संस्था की रजत जयन्ती समारोह का आयोजन।
- रंल्वू दिवस, पुस्तक मेला, साहित्योत्सव, खेल महोत्सव, आपदा राहत, बहुउद्देशीय शिविरों का आयोजन।
- संस्था द्वारा प्रकाशित अथवा संस्था के सम्मानित सदस्यों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तथा आडियो/वीडियो कैसेट के विमोचन कार्यक्रम एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

(ख) रं क्षेत्र, साहित्य, शिक्षा, जन–स्वास्थ्य एवं धर्म संस्कृति के क्षेत्रों को विकसित करने का प्रयास करने के साथ–साथ आपदा राहत एवं समाज सेवा के विविध कार्य करना।

* संस्था की पत्रिका 'अमटीकर', 'रिंलैबा', 'मछड' तथा 'हलो–साथो' का नियमित प्रकाशन।

- स्व0 जगत सिंह नबियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'सै ह्यामों' (कागपुराण), स्व0 हयात सिंह फकलियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'हड़प्पा सारस्वत सभ्यता एवं रं संस्कृति', श्री मंगल सिंह ह्यांकी द्वारा राचित पुस्तक 'सौह्यामों (काग पुराण)' तथा श्री रवि पतियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. परमल सिंह ह्यांकी' का प्रकाशन।
- अनेक रं–रंस्या लेखकों/लेखिकाओं द्वारा रचित/प्रकाशित पुस्तकों का संस्था के नियमित कार्यक्रमों में अथवा विशिष्ट प्रयोजन से आयोजित कार्यक्रमों में विमोचन।
- रं गीत–संगीत के रिकार्डिंग हेतु रं गायक कलाकारों को आर्थिक सहायता एवं आडियो/वीडियो कैसेट का विमोचन।
- **Rungmung.com** के नाम से रं वेबसाइट का निर्माण।
- 'रं शिक्षा कोष' का गठन एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को पुरस्कार/छात्रवृत्ति।
- निर्धन किन्तु प्रतिभावान रं छात्र–छात्राओं के निमित्त पिथौरागढ़, हल्द्वानी तथा देहरादून में छात्रावास का निर्माण एवं संचालन।
- धारचूला, हल्द्वानी तथा देहरादून में रं लाइब्रेरी का संचालन।
- देहरादून, हल्द्वानी एवं धारचूला में रं छात्र–छात्राओं को कैरियर काउंसलिंग तथा देहरादून में प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में निःशुल्क अथवा रियायती दरों पर कोचिंग की सुविधा।
- सूचना एवं संस्कृति विभाग में संस्था के सांस्कृतिक दल का पंजीकरण तथा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, राज्य स्थापना दिवस, कॉमनवैल्थ विंटर गेम्स, विंटर कार्निवाल (नैनीताल, मसूरी), जी–20 आदि कार्यक्रमों में संस्था के सौजन्य से रं सांस्कृतिक दलों के द्वारा प्रस्तुति/प्रतिभाग।

- रं भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु वार्षिक अधिवेशन तथा प्रधान कार्यालय/शाखा की बैठकों में रं भाषा के प्रयोग पर बल।
- धारचूला में रं संग्रहालय की स्थापना, ऐतिहासिक धरोहरों का संकलन एवं संग्रहालय का संचालन।
- रं महोत्सव के दौरान अथवा अन्य प्रमुख अवसरों पर स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन तथा प्रत्येक रं ग्राम में ब्लड प्रेशर मशीन के साथ–साथ फर्स्ट एड मेडिकल किट की व्यवस्था।
- गंभीर रोगग्रस्त निर्धन रं जनों को चिकित्सा सुविधा एवं आर्थिक सहायता तथा इस निमित्त 'रं राहत कोष' का गठन।
- 1998 की मालपा आपदा, वर्ष 2013 की आपदा आदि अवसरों पर तथा कोविड महामारी के दौरान बचाव/राहत कार्य एवं आर्थिक सहायता वितरण।
- रं ग्रामों में आपदा की स्थिति में तात्कालिक सुविधा राहत हेतु टैण्ट, पोर्टेबल टॉयलेट, मैट, पालकी/स्ट्रेचर, रस्सी आदि सामग्री/उपकरणों की उपलब्धता।
- मानसून/आपदा के दौरान कटआफ इलाकों में हैली सेवा के संचालन हेतु प्रभावी अनुश्रवण।

(ग) रं कुटीर उद्योगों के विकास के लिए स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि करना तथा स्थानीय उत्पादों के विपणन की व्यवस्था करना।

तथा

(घ) भेड़ पालन को प्रोत्साहन के साथ ऊनी व्यवसाय के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना।

- संस्था के वार्षिक अधिवेशन/महोत्सव तथा अन्य प्रमुख अवसरों पर प्रतिभागी पुरूष–महिला द्वारा अपने पारम्परिक परिधान (रंगा–च्युंग बाला) के प्रयोग पर बल।
- रं महिलाओं के परम्परागत परिधान (च्युंग बाला) निर्माण की विधा के प्रशिक्षण की व्यवस्था/आर्थिक सहयोग।
- रं कुटीर उत्पादों के विपणन हेतु रं संग्रहालय धारचूला के परिसर में हिमाद्री शो रूम की स्थापना सहित रं उद्यमियों हेतु आउटलेट/दुकान की उपलब्धता।
- रं क्षेत्रों में बागवानी, कृषि, मत्स्य पालन, जड़ी–बूटी, सगन्ध पौध उत्पादन के विकास हेतु स्थलीय प्रशिक्षण, एक्पोजर विजिट एवं बीज–पौध/उपकरण वितरण हेतु सम्बन्धित संस्थाओं से समन्वय/अनुश्रवण।
- युवा बेरोजगारों को उत्पादन, विपणन एवं जीविकोपार्जन हेतु काउंसलिंग के निमित्त 'युवा संवाद' एवं 'मंथन' जैसी कार्यशालाओं का आयोजन तथा सम्बन्धित शासकीय विभागों के द्वारा बहुउद्देशीय शिविरों का आयोजन।
- रं क्षेत्रों में सम्पर्क मार्गों/टूरिस्ट ट्रैक के विकास, हट्स,/विश्रामगृह/शैल्टर का निर्माण/सुधारीकरण तथा कुमायूँ मण्डल विकास निगम के माध्यम से 'होम स्टे' योजना के क्रियान्वयन सहित टूरिस्ट गाईड के प्रशिक्षण हेतु प्रयास/समन्वय।

(ङ) निर्धन किन्तु प्रतिभावान रं छात्र–छात्राओं को यथासंभव आर्थिक सहायता (छात्रवृत्ति) एवं प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करना।

तथा

(च) रं समाज से हो रहे प्रतिभा पलायन को रोकना तथा स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना।

तथा

(छ) रं नवयुवकों को रोजगार/स्वरोजगार के अधिक अवसर प्रदान कराने हेतु मार्गदर्शन/प्रशिक्षण प्रदान करना।

- पिथौरागढ़, हल्द्वानी एवं देहरादून में छात्रावास की सुविधा।
- धारचूला, हल्द्वानी एवं देहरादून में लाईब्रेरी की सुविधा।
- 'रं शिक्षा कोष' के माध्यम से मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति/पुरूस्कार।
- देहरादून, हल्द्वानी एवं धारचूला में कैरियर काउंसलिंग तथा देहरादून के प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में निःशुल्क/रियायती दर पर कोचिंग की सुविधा।
- रं बेरोजगार युवाओं को कौशल विकास के अवसर सुलभ कराने हेतु संस्था के प्रयास से धारचूला में आई. टी.आई. की पुनर्स्थापना।

- युवाओं के साथ बेहतर संवाद एवं मार्गदर्शन हेतु 'युवा संवाद' एवं 'मंथन' जैसी कार्यशालाओं का आयोजन।
- संस्था द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'मछङग' का पूर्ण सम्पादन संस्था के युवा सदस्यों के समूह 'रं यूथ फोरम' द्वारा।
- रं समाज के निर्धन छात्र–छात्राओं को रियायती/निःशुल्क शिक्षा सुलभ कराने के निमित्त स्थापित रं कम्युनिटी स्कूल, धारचूला के संचालन की निरन्तरता एवं बेहत्तर प्रबन्धन हेतु प्रयास एवं आर्थिक सहयोग।
- संस्था के सदस्यों/पदाधिकारियों द्वारा समय–समय पर रं कम्युनिटी स्कूल का भ्रमण करते हुए शिक्षकों एवं छात्रों का उत्साहवर्द्धन/मार्गदर्शन।
- सोशियल मीडिया के माध्यम से रोजगार सम्बन्धी समाचारों का प्रचार–प्रसार।

(ज) रं समाज के नवयुवकों को क्रीड़ा एवं साहसिक कार्य के क्षेत्र में आगे आने हेतु प्रोत्साहित करना।

- वार्षिक अधिवेशन/रं महोत्सव के अवसरों पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- धारचूला में प्रतिवर्ष 'झ्यंगमोथन (मैराथन) तथा खेल सप्ताह' का आयोजन।
- संस्था की शाखाओं के स्तर पर भी प्रतिवर्ष खेलकूद एवं पेटिंग–रंगोली आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- वर्ष 2010 में पांगू में आयोजित रं महोत्सव के अवसर पर युवाओं को ट्रेकिंग का प्रशिक्षण तथा ट्रेकिंग एवं पर्वतारोहण अभियान का शुभारम्भ और तदोपरान्त समय–समय पर ऐसे प्रशिक्षण शिविरों/अभियानों का वित्त पोषण।
- संस्था के प्रयास से धारचूला में स्पोर्ट्स स्टेडियम एवं बहुउद्देशीय इंडोर हॉल का निर्माण एवं समय–समय पर खेल कोचिंग की व्यवस्था।
- पर्वतारोहण एवं साहसिक खेलों के क्षेत्र में विशिष्ठ उपलब्धि प्राप्त करने वाले रं–रंस्या का सम्मान तथा उनके द्वारा नये खिलाड़ियों को प्रोत्साहन।
- विभिन्न आपदाओं एवं कोविड महामारी के दौरान राहत एवं बचाव कार्य में रं युवाओं की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित कराना।

(झ) रं समाज एवं क्षेत्र में विभिन्न रचनात्मक कार्यों द्वारा जागृति पैदा करना।

- वार्षिक अधिवेशन/रं महोत्सवों के दौरान सामाजिकता एवं सहकारिता पर बल। रं क्षेत्रों (रं राजू) में ही रं महोत्सव का आयोजन कर रं–रंस्या (रं नर–नारी) को अपने गाँव एवं अपनों के मध्य आने हेतु प्रेरणा तथा विविध रचनात्मक कार्यों में सहभागिता।
- स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन तथा झ्यंगमोथन (मैराथन) के अन्तर्गत 'ग्रीन धारचूला–क्लीन धारचूला' अभियान के माध्यम से स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागृति का प्रसार।
- अधिवेशनों/महोत्सवों के दौरान रं माटी संरक्षण के प्रति जन जागृति के कार्यक्रमों का आयोजन।
- रं युवाओं के दल द्वारा प्रत्येक घाटी के ग्रामों का भ्रमण कर जन जागरण/मूलभूत सूचना संकलन।
- आपदा राहत/कोविड महामारी बचाव कार्यों का संचालन एवं इसमें आम जन की सहभागिता।
- समय–समय पर रं थीम पर पेंटिंग–रंगोली प्रतियोगिताओं तथा देहरादून एवं धारचूला में रंल्वू में क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से जन जागरण।
- रं यूथ फोरम के माध्यम से युवाओं को आपदा बचाव/राहत, समाज सेवा, लाईब्रेरी संचालन, कैरियर काउंसलिंग/कोचिंग एवं अन्य रचनात्मक कार्यों में सहभागिता हेतु प्रोत्साहन।

(ञ) घर–गाँवों के आपसी विवादों को दूर करने एवं परस्पर सौहार्दपूर्ण वातावरण सृजन का कार्य करना।

- वार्षिक अधिवेशन/महोत्सव के आयोजन तथा अन्य समारोहों के माध्यम से तथा विशेषकर रं क्षेत्र में ही घाटीवार रं महोत्सव का आयोजन करते हुए रं–रंस्या, रं ग्राम एवं रं घाटियों के मध्य परिचय एवं बेहतर सम्बन्धों की स्थापना तथा परस्पर सौहार्द में वृद्धि के अवसर/मंच सुलभ कराना।
- संस्था की प्रेरणा अथवा संस्था के अनुरोध पर संस्था के प्रभावशाली/सक्षम सदस्यों के द्वारा यथाआवश्यकता घर–गाँव के आपसी विवादों को दूर कराने का प्रयास।

(ट) **रं संस्कृति, साहित्य, सामाजिक/आर्थिक व्यवस्था आदि विविध पहलुओं पर शोध/सर्वेक्षण कार्य करना तथा पुस्तकों के साथ–साथ सामयिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करना।**

- संस्था की पत्रिका 'अमटीकर', 'रिंलेबा' 'मछङ' तथा 'हलो–साथो' का प्रकाशन।
- स्व0 जगत सिंह नबियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'सै ह्यामों' (कागपुराण), स्व0 हयात सिंह फकलियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'हड़प्पा सारस्वत सभ्यता एवं 'रं संस्कृति', श्री मंगल सिंह ह्यांकी द्वारा राचित पुस्तक ''सैह्यामों (काग–पुराण)'' तथा श्री रवि पतियाल द्वारा लिखित पुस्तक 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. परमल सिंह ह्यांकी' का प्रकाशन।
- अनेक रं–रंस्या द्वारा रचित/प्रकाशित पुस्तकों तथा आडियो/वीडियो कैसेट का संस्था के कार्यक्रमों में विमोचन।
- रं गीत–संगीत के रिकार्डिंग हेतु रं कलाकारों को आर्थिक सहायता एवं कैसेट विमोचन।
- धारचूला में रं संग्रहालय की स्थापना, ऐतिहासिक धरोहरों का संकलन एवं संग्रहालय का संचालन।
- 'रं शिक्षा कोष' का गठन एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को पुरस्कार।
- निर्धन किन्तु प्रतिभावान रं छात्र–छात्राओं के निमित्त पिथौरागढ़, हल्द्वानी तथा देहरादून में छात्रावास का संचालन।
- धारचूला, हल्द्वानी तथा देहरादून में रं लाइब्रेरी का संचालन।
- देहरादून, हल्द्वानी एवं धारचूला में रं छात्र–छात्राओं को कैरियर काउंसिल तथा देहरादून में प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में निःशुल्क अथवा रियायती दरों पर कोचिंग की सुविधा।
- सूचना एवं संस्कृति विभाग में संस्था के सांस्कृतिक दल का पंजीकरण तथा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, राज्य स्थापना दिवस, कॉमनवैल्थ विंटर गेम्स, विंटर कार्निवाल (नैनीताल, मसूरी) तथा जी–20 आदि कार्यक्रमों में संस्था के सांस्कृतिक दल द्वारा प्रस्तुति।
- रं भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु वार्षिक अधिवेशन तथा प्रधान कार्यालय/शाखा की बैठकों में रं भाषा के प्रयोग पर बल।
- प्रदेश सरकार द्वारा क्षेत्रीय भाषा पाठ्यक्रम में रंल्वू के समावेश/पाठ्य रचना हेतु प्रयास/योगदान।
- रं राजू (क्षेत्रों) के ग्रामों एवं ग्रामवासियों की प्रास्थिति **(Status)** का रं शोधार्थियों द्वारा अध्ययन/सूचना संकलन हेतु अध्ययन दल को वित्त पोषण तथा शोध छात्रों को अन्यथा प्रोत्साहन/सहयोग।

(ठ) **रं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने तथा उपर्युक्त विविध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संग्रहालय, पुस्तकालय, वाचनालय, सामुदायिक भवन/सभा कक्ष, क्रीड़ा स्थल तथा विपणन केन्द्र आदि अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना एवं संचालन करना।**

- धारचूला में रं संग्रहालय की स्थापना, संचालन तथा रं कुटीर उत्पादों के विपणन की व्यवस्था।
- धारचूला, हल्द्वानी एवं देहरादून में रं पुस्तकालय का संचालन तथा घाटीबगड़ में रं पुस्तकालय/वाचनालय की स्थापना।
- पिथौरागढ़, हल्द्वानी, देहरादून, बरेली, लखनऊ एवं नई दिल्ली में रं मं बं/रं चिम का निर्माण एवं संचालन।
- पिथौरागढ़, हल्द्वानी एवं देहरादून में छात्रावास की व्यवस्था।
- धारचूला, पांगू, दांतू, गुंजी एवं माकम कैलाश (रूंग–तीज्या) में सांस्कृतिक परिसर/मंच का निर्माण तथा सेला, दांतू, गौ, नारायण आश्रम, कुटी, गुंजी, गर्ब्यांग आदि ग्रामों में संस्था के प्रयास से लोक निर्माण विभाग/पर्यटन विभाग/समाज कल्याण विभाग द्वारा विश्राम गृह अथवा मिलन गृहों का निर्माण/स्वीकृति।
- भीमताल में जसुली बुढ़ी शौक्याणी धर्मशाला संरक्षण कार्यशाला का आयोजन, धर्मशालाओं के चिन्हीकरण एवं जीर्णोद्वार/संरक्षण अभियान का शुभारम्भ जिसके अन्तर्गत भवाली, सुयालबाड़ी, पिथौरागढ़ आदि कतिपय स्थानों पर स्थित धर्मशालाओं का पुनरोद्धार कार्य सम्पन्न/प्रारम्भ।
- दारमा घाटी के दुग्तू, रामा तथा बिदांग में लोक निर्माण विभाग के विश्रामगृहों का सुधारीकरण।
- कस्तूरी मृग विहार क्षेत्र के पुनर्चिन्हांकन में सफलता तथा नोटिफाइड एरिया/इनर लाईन की सीमा के पुनर्निर्धारण हेतु प्रयास।

- रं क्षेत्रों में अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु 'घटियाबगड़–लिपूलेख मोटर मार्ग, गुंजी–जौलिंगकंग मोटर मार्ग, सोबला–तिदांग मोटर मार्ग के नव निर्माण हेतु विशिष्ठ प्रयास एवं निर्माण कार्य में गति हेतु निरन्तर अनुश्रवण।
- सेला एवं चल में मोटर पुल तथा बौन में झूला पुल (जीप मार्ग) की स्वीकृति।
- धौली नदी के दूसरी ओर सेला से बौन तक मोटर मार्ग के निर्माण की स्वीकृति।
- तिदांग–ग्वो–फिलम–बौन मोटर मार्ग की स्वीकृति।
- तिदांग–मार्छा–सीपू मोटर मार्ग की स्वीकृति।
- दारमा घाटी एवं व्यॉस घाटी के पैदल मार्गों के जीर्णोद्धार एवं अन्य रोड साइड सुविधाएं (कैफेटेरिया, हट्स, शेल्टर, बैंच, पेयजल आदि) की सुविधाएं तथा पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण ट्रैकिंग मार्गों (दारमा में ब्यक्सी ग्वार जैसे बुग्याल सम्पर्क मार्ग) का निर्माण/सुधार।
- दारमा घाटी में चरक्या ह्या के खर तक पैदल मार्ग, रामा कुण्ड तक पैदल मार्ग तथा सेला से चल होते हुए बोन तक पैदल मार्ग का सुधार।
- दारमा घाटी से व्यॉस घाटी के सिनला पास होकर जोड़ने वाले पैदल मार्ग का जीर्णोद्धार तथा टनल निर्माण हेतु निरन्तर अनुश्रवण।
- नाभीढ़ांग–लिपूलेख मार्ग से भारतीय सीमा के अन्दर ही कैलाश दर्शन स्थल तक पैदल सम्पर्क मार्ग तथा विश्राम स्थल का निर्माण/विकास तथा कालान्तर में मोटर मार्ग के निर्माण हेतु अनुश्रवण।
- तवाघाट (कंच्योती)– नारायण आश्रम मोटर मार्ग के सुधारीकरण की स्वीकृति।
- तवाघाट–ठाणीधार मोटर मार्ग, पांगू–रिमझिम– बैंकु–रौंतों मोटर मार्ग, हिमखोला मोटर मार्ग, सौसा–सिर्दांग–सिरखा मोटर मार्ग, गसकु– जयकोट–रूंग मोटर मार्ग, नारायण आश्रम– पस्ती–जयकोट मोटर मार्ग एवं नाबी–रोंकोंग मोटर मार्ग की स्वीकृति/निर्माण।
- धारचूला बाजार के आन्तरिक मार्गों का पुनर्निर्माण तथा धारचूला से खोतिला हेतु सम्पर्क मार्ग/सेतु की स्वीकृति।
- टनकपुर–जौलजीवी मोटर मार्ग की स्वीकृति हेतु प्रयास।
- धारचूला में टैक्सी स्टैण्ड एवं स्पोर्ट्स स्टेडियम का निर्माण।
- धारचूला में काली नदी के किनारे बाढ़ सुरक्षा एवं घाट निर्माण/सौन्दर्यीकरण (मैरीन ड्राइव) का कार्य।
- धारचूला के खोतीला एवं एलधारा में भूस्खलन से बचाव हेतु सुरक्षा कार्यों की स्वीकृति।
- जी.जी.आई.सी., धारचूला, जी..आई.सी., पांगू एवं जी.आई.सी. माकम कैलाश के भवनों के निर्माण हेतु धनाबंटन तथा फर्नीचर/खेल सामग्री आदि की उपलब्धता हेतु अनुश्रवण।
- जौलजीवी, बलुवाकोट एवं धारचूला के साथ–साथ तीनों घाटियों के विभिन्न ग्रामों में बाढ़ सुरक्षा योजनाओं की स्वीकृति।
- दारमा, व्यास एवं चौंदास, तीन घाटियों के कतिपय ग्रामों में सिंचाई गूलों की स्वीकृति/निर्माण।
- तीनों घाटियों के अनेक ग्रामों में पेयजल योजनाओं का निर्माण/पुनर्गठन।
- तीन घाटियों में विद्युत आपूर्ति हेतु लाईन निर्माण अथवा लघु जल विद्युत परियोजनाओं/सौर ऊर्जा की स्वीकृति एवं निर्माण का अनुश्रवण।
- रं क्षेत्रो (रं राजू) के चिकित्सालयों एवं विद्यालयों के भवन निर्माण, साज–सज्जा, संसाधन तथा पर्याप्त कार्मिकों की तैनाती हेतु अनुश्रवण।
- तिब्बत व्यापार के उचित समन्वय हेतु संस्थागत ढ़ांचे की स्थापना एवं व्यापार की बेहत्तर सुविधा हेतु प्रयास।
- धारचूला से हैली सेवा की नियमित सुविधा हेतु प्रयास।

(ड) वार्षिक समारोह, विचार गोष्ठी तथा विकास/बहुउद्देशीय शिविर (मेला) आदि कार्यक्रम आयोजित करना।

- प्रस्तर (क), (ख), (ग) एवं (घ) में यथा उल्लिखित।

(ढ़) रं प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना तथा उनके कार्यों को उजागर कर उन्हें यथोचित सम्मान दिलाना।

- प्रथम रं एवरेस्टर श्री मोहन सिंह गुंज्याल तथा प्रतिष्ठित मूर्तिकार श्री डी.आर. सीपाल का पद्मश्री सम्मान हेतु नामांकन (Citation प्रेषण) जिसके क्रम में श्री मोहन सिंह गुंज्याल पद्मश्री सम्मान से सम्मानित।
- राष्ट्रपति पुरूस्कार से सम्मानित विदुषी शिक्षिका एवं प्रथम 'रं रत्न' सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल के नाम पर राजकीय बालिका इण्टर कालेज, पिथौरागढ़ का नामकरण, एकमात्र रं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. परमल सिंह ह्याँकी के नाम पर जी.आई.सी., पांगू का नामकरण तथा दानवीरांगना' जसुली बुढ़ी शौक्याणी' के नाम पर जी.जी. आई.सी., धारचूला का नामकरण कराना।
- समाजसेवी 'स्व. श्री जवाहर सिंह नबियाल' के नाम पर स्पोर्ट्स स्टेडियम, धारचूला का नामकरण कराना।
- विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ठ उपलब्धि प्राप्त करने/योगदान करने वाले रं विभूतियों को 'रं रत्न' एवं 'रं गौरव' सम्मान।
- रं गीत–संगीत एवं अन्य विधाओं में विशिष्ट योगदान करने वाले रं–रंस्या का समय–समय पर सम्मान।
- संस्था की गतिविधियों/विशिष्ट परियोजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग करने वाले पदाधिकारियों/सदस्यों का सम्मान तथा शिक्षा/सेवा के क्षेत्र में विशिष्ठ उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं का विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान सम्मान/प्रोत्साहन।

(ण) रं ल्वू को विलुप्त होने से बचाने हेतु सक्रिय एवं सकारात्मक उपाय करना।

- रंल्वू की लिपि तैयार करने हेतु किए जा रहे कार्यों को प्रोत्साहन।
- रं ल्वू में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन।
- संस्था के छांगरू वार्षिक अधिवेशन/महोत्सव में पूर्णतः रंल्वू का ही प्रयोग।
- संस्था की बैठकों में रंल्वू के प्रयोग पर बल।
- रंल्वू के शब्दकोषों की रचना/प्रकाशन को प्रोत्साहन तथा विमोचन।
- रं बैरा को प्रोत्साहन तथा गीत रचना/रिकार्डिंग में सहयोग।
- प्रदेश सरकार द्वारा क्षेत्रीय भाषा पाठ्यक्रम में रंल्वू के समावेश/पाठ्य रचना हेतु प्रयास/योगदान।
- धारचूला में प्रत्येक वर्ष 'रंल्वू' दिवस' का आयोजन जिसमें पूर्णतः 'रंल्वू' का प्रयोग।
- धारचूला में प्रतिवर्ष साहित्योत्सव का आयोजन जिसमें 'रंल्वू' आधारित रचनाओं पर बल।
- सोशियल मीडिया के माध्यम से रं साहित्य संवर्द्धन का प्रयास।

(त) उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चन्दा, दान, अनुदान तथा अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करना।

- संस्था के सदस्यों तथा रं समाज के सक्षम व्यक्तियों से वर्ष में एकबार 'एक दिन की आय'/'आय का एक प्रतिशत' अंशदान लिए जाने की व्यवस्था तथा इस हेतु प्रभावी अनुश्रवण।
- निर्धन परिवारों को गंभीर बीमारी के उपचार हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 'रं राहत कोष' का गठन तथा कोष हेतु संस्था के सदस्यों के साथ–साथ अन्य सक्षम व्यक्तियों/ संस्थाओं से आर्थिक सहायता की प्राप्ति।
- 'रं शिक्षा कोष' का गठन तथा इस हेतु श्रीमती गंगोत्री गुंज्याल, श्री महिमन सिंह गुंज्याल, दारमा सेवा समिति, श्री कृष्ण सिंह रौंतेला तथा श्री पूरन सिंह सेलाल से वित्तीय सहयोग की प्राप्ति।
- उत्तराखण्ड शासन/सांसद निधि/विधायक निधि से पिथौरागढ़, देहरादून, हल्द्वानी तथा लखनऊ में रं मं बं भवनों के निर्माण/विकास हेतु आर्थिक सहायता की प्राप्ति।
- उत्तराखण्ड शासन से पुस्तक प्रकाशन, रं महोत्सव तथा झ्यंगमोथन/खेल सप्ताह के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता।
- अमटीकर में विज्ञापन प्रकाशन हेतु सक्षम संस्थाओं से समन्वय/अनुश्रवण।
- रं समाज के सक्षम व्यक्तियों द्वारा अपने परिजनों की स्मृति में 'रिंलैबा' प्रकाशन को वित्त पोषित कराने हेतु प्रोत्साहन एवं अनुश्रवण।
- रं मं बं, दिल्ली तथा रं मं बं, लखनऊ के निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग अभियान।

- संस्था सदस्यों एवं रं समुदाय के सक्षम लोगों के द्वारा संस्था के ट्रैक रिकॉर्ड से प्रेरित होकर पिछले कुछ वर्षों से प्रति वर्ष अपनी वार्षिक आय के 10% राशि संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संस्था को सहयोग राशि के रूप में दिया जा रहा है।
- संस्था के उद्देश्यों एवं उन्हें उनके प्राप्ति के ट्रैक रिकॉर्ड्स के दृष्टिगत आयकर विभाग से संस्था को आयकर की देयता से छूट हेतु 12ए की अनुमति तथा दानदाताओं को भी आयकर की देयता में नियमानुसार छूट हेतु 80(G) की अनुमति प्राप्त।

2. संस्था की सामान्य कार्य संचालन प्रक्रिया, वित्तीय स्थिति तथा प्रमुख परियोजना/गतिविधियां :

(1) संस्था के पदाधिकारियों का चयन एवं उनके द्वारा कार्य सम्पादन।

- संस्था के संविधान/बायलाज में विहित प्रक्रिया के अनुसार वार्षिक अधिवेशन का आयोजन करते हुए कार्यकारिणी समिति का पुनर्गठन/ पदाधिकारियों का निर्वाचन किया जाता है।
- नव गठित कार्यकारिणी समिति द्वारा समय–समय पर बैठकों का आयोजन करते हुए विभिन्न विषयों पर सम्यक निर्णय लिए जाते हैं तथा आवश्यकतानुसार कालान्तर में वार्षिक अधिवेशन में साधारण सभा का भी कार्योत्तर अनुमोदन प्राप्त किया जाता है।
- संस्था के वार्षिक अधिवेशन सहित कार्यकारिणी समिति की बैठकों के कार्यवृत्त तैयार, परिचालित एवं क्रियान्वित किए जाते हैं।
- वार्षिक अधिवेशन/कार्यकारिणी समिति के निर्णयों से समय–समय पर संस्था की शाखाओं को तथा अगले वार्षिक अधिवेशन में सदस्यों (आम सभा) को भी अवगत कराते हुए तथा शाखाओं के साथ–साथ आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों का सहयोग प्राप्त करते हुए विभिन्न कार्यों को सम्पादित किया/कराया जाता है।
- संस्था की बैठकों में प्रतिभाग करने अथवा संस्था की विविध गतिविधियों के प्रयोजन से यात्रा करने पर प्रतिभागियों द्वारा समस्त व्यय स्वयं वहन किया जाता है।

(2) वार्षिक अधिवेशन/रं महोत्सव के आयोजन की व्यवस्था।

- संस्था द्वारा नियमित रूप से वार्षिक अधिवेशन आयोजित किये जाते हैं। सामान्यतया हर दूसरे वर्ष आयोजित होने वाले वार्षिक अधिवेशन को रं महोत्सव के रूप में बहुआयामी बनाने का प्रयास किया जाता है और उसके अगले वर्ष आयोजित होने वाले वार्षिक अधिवेशन को गंभीर विचार–विमर्श एवं नीति निर्धारण के बिन्दु पर केन्द्रित रखा जाता है।
- संस्था द्वारा वार्षिक अधिवेशन एवं रं महोत्सव के आयोजन की समस्त व्यवस्थाएं करने हेतु आयोजन स्थल से सम्बन्धित संस्था की शाखा को ही दायित्व दिया जाता है। संस्था के केन्द्रीय कार्यालय द्वारा सम्बन्धित शाखा को वार्षिक अधिवेशन तथा रं महोत्सव के आयोजन हेतु टोकन सहायता राशि दी जाती है और आयोजन पर होने वाले अन्य व्ययों की व्यवस्था सम्बन्धित शाखा द्वारा अपने सदस्यों एवं स्थानीय अन्य समर्थ ग्रामों/संस्थाओं/महानुभावों से सहयोग लेकर की जाती है। प्रधान कार्यालय स्तर से अपेक्षित कार्यों पर स्वयं प्रधान कार्यालय द्वारा व्यय किया जाता है।

(4) संस्था द्वारा 'रं रत्न' एवं 'रं गौरव' सम्मान दिये जाने की व्यवस्था/परम्परा।

- संस्था द्वारा 'रं रत्न', 'रं गौरव' आदि सम्मान दिये जाने की परम्परा रं विभूतियों के उल्लेखनीय योगदान को प्रकाश में लाकर उन्हें यथोचित सम्मान देने तथा इसके माध्यम से अन्य रं–रंस्या के लिए प्रोत्साहन का वातावरण सृजित किये जाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही प्रारम्भ की गयी। वार्षिक अधिवेशन/रं महोत्सव के पूर्व कार्यकारिणी समिति के द्वारा शाखाओं के साथ तथा आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों के साथ भी विचार–विमर्श के माध्यम से 'रं रत्न' एवं 'रं गौरव' सम्मान दिये जाने हेतु महानुभावों का चयन द्वारा किया जाता रहा है।
- 'रं रत्न' सम्मान की शुरूआत वर्ष 1993 में धारचूला में आयोजित विशाल रं सम्मेलन में की गयी जिसमें प्रख्यात शिक्षाविद् एवं समाजसेवी सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल, प्रख्यात पर्वतारोही सुश्री चन्द्रप्रभा ऐतवाल एवं प्रथम रं एवरेस्टर श्री मोहन सिंह गुंज्याल को 'रं रत्न' सम्मान दिया गया।
- वर्ष 2008 में धारचूला रं महोत्सव के अवसर पर प्रथम बार 'रं गौरव सम्मान' की भी शुरूआत की गयी, जिसमें स्व0 हरीश रौतेला को मरणोपरान्त 'रं गौरव' सम्मान दिया गया।

- प्रारम्भ में 'रं रत्न' सम्मान आजादी के बाद की विभूतियों को उनके विशिष्ट योगदान हेतु दिये जाने का निर्णय लिया गया, किन्तु बाद के वार्षिक अधिवेशनों एवं अन्य अवसरों पर प्राप्त हुए सुझावों के दृष्टिगत आजादी के पूर्व की विशिष्ट विभूतियों को भी 'रं रत्न' एवं 'रं गौरव सम्मान दिये जाने का निर्णय लिया गया।
- समान कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित किसी महानुभाव को 'रं रत्न' तथा किन्हीं अन्य महानुभावों को रं गौरव सम्मान दिये जाने का निर्णय भी अवश्य लिया गया, किन्तु ऐसा निर्णय लिये जाने का आधार 'रं रत्न' पाने वाले महानुभाव के सम्बन्धित क्षेत्र में 'पायनियर' होने अथवा उनकी उपलब्धियों की तुलनात्मक अधिकता एवं विविधता होना रहा है।
- अब तक निम्न विवरणानुसार कुल 17 महानुभावों को 'रं रत्न' तथा 24 महानुभावों को 'रं गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया है :–

रं रत्न सम्मान

क्र. सं.	सम्मान दिए जाने का वर्ष/तिथि	रं रत्न से सम्मानित गणमान्यों के नाम	कार्य क्षेत्र	उपलब्धियां
1	10.4.93	सुश्री गंगोत्री गर्ब्याल	शिक्षा, समाजसेवा	रं समाज की प्रथम एवं एकमात्र राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता, महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता लाकर महिला सशक्तिकरण में अग्रणी एवं सामाज सुधार में महत्वपूर्ण योगदान।
2	10.4.93	सुश्री चन्द्रप्रभा एतवाल	पर्वतारोहण	प्रख्यात पर्वतारोही, अर्जुन पुरस्कार विजेता, तेंजिंग नॉरगे पुरस्कार विजेता तथा पद्मश्री अलंकार से विभूषित।
3	10.4.93	श्री मोहन सिंह गुंजियाल	पर्वतारोहण, स्कीइंग	प्रथम रं एवरेस्ट विजेता, अर्जुन पुरस्कार विजेता, तेंजिंग नॉरगे पुरस्कार विजेता तथा पद्मश्री अलंकार से विभूषित।
4	22.10.99	स्व. रतन सिंह रायपा	साहित्य एवं शोध	रं समुदाय के प्रथम मानव विज्ञानी, रं समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर गहन मौलिक शोधकर्ता रहे।
5	22.10.99	स्व.हयातसिंह फकलियाल (मरणोपरांत)	साहित्य एवं शोध	रं समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर गहन मौलिक शोधकर्ता/इतिहासकार।
6	22.10.99	स्व.शोबन सिंह दरियाल (मरणोपरांत)	समाजसेवा	दारमा सेवा समिति के संस्थापक, जीवन पर्यंत समाज सेवा।
7	22.2.2004	स्व. जगत सिंह नबियाल (मरणोपरांत)	रं साहित्य	मरणोपरांत रं समुदाय में प्रचलित कर्मकांड एवं रं संस्कृति के गहन शोधोपरांत 'काकपुराण' की रचना।
8	22.2.2004	स्व.जवाहर सिंह नबियाल (मरणोपरांत)	समाज सेवा व साहित्य	धारचूला नगर पंचायत के प्रथम रं अध्यक्ष, तत्कालीन उ.प्र. अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य, प्रथम रं ब्लॉक प्रमुख, रं सरोकार के प्रखर चिंतक एवं पथ प्रदर्शक, प्रतिष्ठित गीतकार, साहित्यकार एवं समाजसेवक।
9	24.2.2005	स्व.ललित सिंह गर्ब्याल (मरणोपरांत)	शहीद ITBP	आतंकवादियों से लड़ते हुये वीरगति प्राप्त होकर सर्वोच्च बलिदान दिया, मरणोपरांत गैलेन्ट्री अवार्ड से सम्मानित।
10	24.2.2005	सुश्री सुमन कुटियाल दताल	पर्वतारोहण	रं समाज की प्रथम महिला एवरेस्ट विजेता तथा राष्ट्रीय साहसिक खेल पुरस्कार से सम्मानित।
11	24.4.2010	श्री नृप सिंह नपलच्याल	सिविल सर्विसेज	प्रथम रं आई.ए.एस. एवं मुख्य सचिव, मुख्य सूचना आयुक्त जैसे महत्वपूर्ण पदों पर आसीन, रं सरोकार के प्रखर चिंतक एवं पथ प्रदर्शक।

12	1.6.2014	डा. जीवन सिंह तितियाल	चिकित्सा	अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेत्र चिकित्सक, पद्मश्री अलंकार से विभूषित।
13	27.7.2014	स्व. गोबर्या पंडित (मरणोपरांत)	समाज सेवा, शिक्षाविद	रं सरोकार के प्रखर चिंतक व पथ प्रदर्शक, अंग्रेजी राज में राय साहब की पदवी प्राप्त, सोसाइटी फॉर इंकरेजमेंट ऑफ इंडस्ट्रीज, कॉमर्स एण्ड आर्ट्स, एडुल्फी के प्रमुख सदस्य रहे।
14	27.7.2014	स्व. बहादुर सिंह ऐतवाल (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज सेवा एवं मंत्री रहे।
15	28.8.2016	स्व. जसुली देवी सौक्यानी (मरणोपरांत)	समाज सेवा	धनाढ्य रं महिला, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी के मध्य में हल्द्वानी एवं टनकपुर से कैलाश मानसरोवर मार्ग में जगह–जगह यात्रियों एवं व्यापारियों हेतु धर्मशालाओं का निर्माण करा कर लोकसेवा की।
16	28.8.2016	स्व. परमल सिंह ह्याँकी (मरणोपरांत) ग्राम पांगू	समाज सेवा	रं समाज के एकमात्र स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे। जीवन पर्यन्त शिक्षा के उन्नयन एवं समाज सेवा में संलग्न रहे।
17	28.8.2016	स्व. मोती सिंह मेम्बर	समाज सेवा	तत्कालीन अल्मोड़ा जिले के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य रहे। रं सरोकारों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु गठित दारमा सेवा समिति के संस्थापक सदस्यों में से थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने एवं मद्य निषेध के लिए व्यापक जन आंदोलन चलाया।

रं गौरव सम्मान

क्र. सं.	सम्मान का वर्ष	सम्मानित गणमान्यों के नाम	कार्य क्षेत्र	उपलब्धियां
1	2006	स्व. श्री हरीश रौतेला (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
2	2010	सुश्री कविता बुड़ाथोकी	पर्वतारोहण	एवरेस्ट विजेता।
3	2012	स्व. जयमल सिंह ग्वाल 'प्रधान' (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
4	2012	स्व. धर्म सिंह बोनाल (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
5	2012	स्व. नैन सिंह बोनाल (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
6	2012	स्व. मोहन सिंह नपल्च्याल (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
7	2012	श्री महिमन सिंह ह्याँकी	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
8	2012	श्री सुन्दर सिंह बोनाल	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।
9	2012	श्री रत्न सिंह सोनाल	पर्वतारोहण	एवरेस्ट विजेता।
10	2014	सुश्री लक्ष्मी रोंकली	चिकित्सा	फ्लोरेंस नाइटिंगेल राष्ट्रीय पुरूस्कार से अलंकृत।
11	2014	स्व. चन्द्र सिंह गर्ब्याल (मरणोपरांत)	शिक्षा, समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज सेवा।
12	2014	स्व. रंधादेवी गर्ब्याल (मरणोपरांत)	शिक्षा, समाज सेवा	रं समाज की प्रथम शिक्षित महिला जिन्होंने जीवन पर्यन्त समाज की सेवा की।

13	2014	स्व. पदमा रौंकली (मरणोपरांत)	शिक्षा, समाज सेवा	जीवन पर्यन्त शिक्षा के क्षेत्र से समाज सेवा की।
14	2014	श्रीमती जसिन्त्या गुंजियाल	चिकित्सा	फ्लोरेंस नाइटिंगेल राष्ट्रीय पुरूस्कार से अलंकृत।
15	2015	स्व. दौलत सिंह ह्याँकी, दौल पंज्यू (मरणोपरांत)	शिक्षा	लोकप्रिय शिक्षक के रूप में जीवन पर्यन्त समाज सेवा की।
16	2016	स्व. नंदराम सिंह लाला	समाज सेवा	समाज सेवक के रूप में रं भाषा को लिपिबद्ध करने की दिशा में अनुकरणीय प्रयास किए गए।
17	2016	स्व. ब्रिगेडियर जनरल गोपाल सिंह बोहरा (से.नि.) (मरणोपरांत)	रं साहित्य	रं साहित्य को अग्रसर करने हेतु अनुकरणीय योगदान दिया गया।
18	2016	स्व. छाना देवी तिंकरी (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज सेवा की।
19	2016	स्व. श्रीमती मोती देवी तिंकरी (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त समाज सेवा की।
20	2016	स्व. सुश्री पद्मा गर्ब्याल	समाज सेवा	जीवन पर्यन्त शिक्षा क्षेत्र में समाज सेवा की।
21	2016	श्री डी. आर. सीपाल	मूर्तिकार	सुप्रसिद्ध मूर्तिकार के रूप में रं समाज का गौरव बढ़ाया।
22	2016	श्री देवेंद्र सिंह गर्ब्याल	शिक्षा	रं कम्यूनिटी स्कूल के संस्थापक।
23	2016	स्व. तिंका सिंह नगन्याल, मेम्बर साहब (मरणोपरांत)	समाज सेवा	जिला अल्मोड़ा के जिला बोर्ड के सदस्य रहे तथा इस हैसियत से समाज की सेवा की।
24	2016	स्व. केशर सिंह रौतेला, केशरू पंडित व स्व. श्रीमती कमली देवी रौतेला (मरणोंपरांत)	शिक्षा	जीवन पर्यन्त शिक्षा से रं लोगों को जागृत कर रं समाज की सेवा की।

- संस्था द्वारा अपनी शाखाओं के माध्यम से यह अपील भी अवश्य की जाती रही है कि किन्हीं क्षेत्रों में यदि अन्य विशिष्ट विभूतियों को भी सम्मान दिया जाना उचित है तो तत्सम्बंधी प्रस्ताव/विवरण संस्था को उपलब्ध करायें, ताकि निकट भविष्य में उन्हें सम्मान दिये जाने पर विचार किया जा सके।

संस्था द्वारा 'रं रत्न' एवं 'रं गौरव' सम्मान हेतु महानुभावों के चयन की प्रक्रिया को और स्पष्ट करने के निमित्त एक औपचारिक नियमावली **'रं कल्याण संस्था के सम्मानों के प्रदाय के नियम–2019'** भी प्रख्यापित की गयी है जिसके अनुसार भविष्य में कार्यवाही की जायेगी।

(5) मालपा त्रासदी, 'रं राहत कोष' का गठन, वर्ष 2013 की आपदा तथा कोविड महामारी के दौरान राहत/बचाव कार्यों का सम्पादन।

क. मालपा आपदा राहत :

वर्ष 1998 में घटित मालपा आपदा के समय प्रभावित परिवारों को राहत सहायता देने हेतु संस्था के सदस्यों/सक्षम महानुभावों से सहयोग राशि प्राप्त करने का अभियान चलाया गया और दिनांक 14.12.1998 को धारचूला में राहत शिविर का आयोजन करते हुए प्रभावित परिवारों को ₹ 5.12 लाख धनराशि की आर्थिक सहायता वितरित की गयी जिसके लिए क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों एवं बुजुर्गों तथा प्रभावित परिवारों में संस्था के प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

ख. 'रं राहत कोष' का गठन एवं राहत वितरण :

रं समाज के निर्धन व्यक्तियों को गंभीर बीमारी के उपचार आर्थिक हेतु आर्थिक सहायता, दैवीय आपदा में राहत दिए तथा निर्धन छात्र–छात्राओं को ऋण दिए जाने के उद्देश्य से 'रं राहत कोष' का गठन किया गया तथा

कोष के संचालन हेतु वर्ष 2009 में 'रं राहत कोष निमयावली' भी प्रख्यापित की गयी। इस कोष से वर्ष 2014–15 के उपरान्त अब तक ₹ 29,86,199/–की आर्थिक सहायता प्रदान की गयी है।

ग. वर्ष 2013 की दैवीय आपदा एवं आपदा राहत कोष का गठन :

माह जून–जुलाई, 2013 की भीषण बाढ़ एवं अतिवृष्टि से प्रभावित परिवारों को राहत सहायता हेतु भी संस्था द्वारा विशेष प्रयास किए गए। इस आपदा से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन जिला प्रशासन पिथौरागढ़ एवं संस्था के धारचूला शाखा के माध्यम से करते हुए संस्था के पदाधिकारियों/सदस्यों के द्वारा तत्समय निम्न प्रयास किये गयेः–

- दारमा घाटी में फंसे हुए लोगों को निकालने के लिए हेलीकॉप्टर व्यवस्था का अनुश्रवण।
- उत्तराखण्ड शासन एवं जिला प्रशासन से समन्वय कर राहत सामग्री की व्यवस्था।
- गोठी, बलुवाकोट एवं धारचूला भू–कटाव बचाव के लिए प्रशासन पर लगातार दबाव।
- अस्थायी आश्रय व्यवस्था एवं विस्थापन के लिए प्रशासन से जमीन की व्यवस्था के लिए समन्वय।
- बाह्य संस्थाओं से समन्वय कर अस्थायी आश्रय निर्माण व्यवस्था हेतु अंशदान एवं सम्पूर्ण सहयोग के लिए समन्वय।
- आपदा राहत कोष हेतु सक्षम व्यक्तियों/संस्थाओं से आर्थिक सहयोग प्राप्त करना।
- सोलर लालटेन की व्यवस्था।
- अन्य स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा किये गये राहत सामग्री वितरण कार्य में भागीदारी।
- दारमा में घायल हुई कु0 पूजा को इलाज हेतु धारचूला से पिथौरागढ़, हल्द्वानी एवं दिल्ली ले जाना।
- आपदा प्रभावित रं परिवारों का प्राथमिक सर्वे।
- केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 11 अगस्त, 2013 में विचार–विमर्श के उपरान्त राहत वितरण हेतु निम्नवत् मानक तय किए गए :–

1. रं प्रभावितों के लिए	सहायता राशि (₹ में)	टिप्पणी
(i) जन हानि	50,000/–	जन हानि सहायता आपदा संबंधित जन हानि के लिए ही दी जायेगी। बाद में यह भी निर्णय लिया गया कि इस श्रेणी में राहत राशि₹ 1.00 लाख दी जायेगी।
(ii) भवन हानि (अति गरीब)	50,000/–	एक भवन की क्षति पर सहायता एक ही आवेदक को प्राप्त होगी।
(iii) भवन हानि	25,000/–	एक भवन की क्षति पर सहायता एक ही आवेदक को प्राप्त होगी।
(iv) घायल (अति गम्भीर)	10,000/–	घायल सहायता के लिए एक सप्ताह अस्पताल में भर्ती ऑपरेशन आदि की स्थिति हेतु दी जायेगी।
(v) घायल	25,00/–	
2. गैर रं प्रभावितों के लिए		
(i) जन हानि	20,000/–	जन हानि सहायता आपदा संबंधित जन हानि के लिए ही दी जायेगी।
(ii) भवन हानि	10,000/–	एक भवन की क्षति पर सहायता एक ही आवेदक को प्राप्त होगी।

- मूलतः उक्त कोष रं समुदाय की सहायता हेतु ही संरचित व्यवस्था थी परन्तु इन विषम परिस्थतियों में रं समुदाय के आस पास गैर रं समुदाय के सदस्यों की पीड़ा और क्षति को समझते हुये संस्था की ओर से उन्हें भी सहायता राशि प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

➢ संस्था द्वारा आपदा राहत कोष में योगदान हेतु अभियान चलाया गया जिसके क्रम में ₹ 1,30,00,596.00 आपदा राहत कोष में प्राप्त हुआ।

➢ संस्था के द्वारा दिनांक 24 अगस्त, 2013 को रं समुदाय के प्रभावितों को सहायता राशि का वितरण किया गया तथा दिनांक 24 अगस्त, 2013 को गैर रं समुदाय के प्रभावितों को सहायता राशि का वितरण किया गया। कुल 370 आपदा प्रभावित परिवारों को नियत मानक के अनुसार ₹ 90,12,980.00 की राहत सहायता राशि वितरित की गई। राहत वितरण शिविर के आयोजन एवं अन्य व्यवस्थाओं पर धारचूला शाखा के माध्यम से ₹ 85,471.00 व्यय हुआ।

- तदोपरान्त धारचूला में क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के द्वारा सभी रं ग्रामों में आपदा की स्थिति में प्राथमिक बचाव के उपकरण एवं टेंट आदि की आवश्यकता/मांग किए जाने पर राहत कोष से ही प्रत्येक ग्राम को टेंट (पोर्टेबल टाईलेट सहित), पालकी/स्ट्रेचर, रोप, मैट आदि उपकरण/सामग्री क्रय कर उपलब्ध कराया गया जिस पर ₹ 27,14,410.00 व्यय हुआ तथा आपदा राहत सामग्री के हल्द्वानी से धारचूला तक ढुलान पर ₹ 14,000.00 व्यय हुआ।
- कालान्तर में रं कम्यूनिटी स्कूल के बंद होने की संभावना को रं समाज के लिए एक आपदा के समान ही स्थिति होने का संज्ञान लेकर इस आपदा राहत कोष से ही ₹ 10.00 लाख की धनराशि स्कूल हेतु आवश्यक निर्माण कार्यों के लिए दी गयी।
- दैवीय आपदा राहत हेतु दान दाताओं से सहायता राशि के एकत्रीकरण, धारचूला में वितरण तथा मुख्यालय वापसी तक संस्था के सदस्यों पर संस्था द्वारा कोई व्यय भार वहन नहीं किया गया तथा प्रतिभागी पदाधिकारियों/सदस्यों ने अपने व्यय पर ही समस्त यात्राएं कीं।

(घ) कोविड महामारी के दौरान सीमान्त क्षेत्रों में राहत/बचाव कार्य :

कोविड–19 के पेन्डिमिक के दौरान धारचूला सीमान्त क्षेत्रों में तेजी से फैल रहे कोविड संक्रमण को रोकने तथा समाज में रोग से पीड़ित लोगों की सहायता करने के उद्देश्य से रं कल्याण संस्था द्वारा दिनांक 13.05.2021 को केन्द्रीय कार्यकारिणी की आपातकालीन बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हुए विचार–विमर्श के क्रम में निम्नवत् बचाव/राहत कार्य किए गए :–

(i) सीमान्त क्षेत्रों में संक्रमण रोकने हेतु मेडिकल किट वितरण तथा जनजागरण :

सीमान्त क्षेत्रों में मेडिकल की सुविधा नाम मात्र की थी, इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि दारमा, व्यास, चौंदास एवं रालम पातों के प्रत्ये गाँव को कोविड संक्रमण से बचाने हेतु मेडिकल किट पहुंचायी जाय। इस निर्णय के तुरन्त बाद रं कल्याण संस्था की शाखा हल्द्वानी के पदाधिकारी एवं श्री योगेश गर्ब्याल के नेतृत्व में कोरोना योद्धाओं की टीम ने कोविड के लिए निर्धारित दवाओं के दस पैकेट, थर्मामीटर, मास्क, हैंड ग्लब्स, पी0पी0आई0 किट्स, आक्सीमीटर आदि सामग्री एकत्रित कर 41 गाँवों के लिए इमरजेंसी में एक–एक मेडिकल किट तैयार किए गए। मेडिकल किट की सम्पूर्ण व्यवस्था हेतु शाखा हल्द्वानी के पदाधिकारी श्री योगेश गर्ब्याल के नेतृत्व में दवाईयों व उपकरणों की खरीद में ₹ 3,03,146.00 (₹ तीन लाख तीन हजार एक सौ छियालीस मात्र) खर्च किए गए। कोरोना वारियर्स के द्वारा चारों घाटियों को मेडिकल किट वितरण में दैनिक खर्चा व ट्रांसपोर्टेशन में ₹ 27,010.00 (₹ सताईस हजार दस मात्र) खर्च किया गया था। इस तरह संस्था द्वारा रं राहत कोष से मेडिकल किट के वितरण हेतु कुल ₹ 3,30,156.00 (₹ तीन लाख तीस हजार एक सौ छप्पन मात्र) खर्च किया गया।

(ii) निर्धन परिवारों को खद्यान्न वितरण :

- रं कल्याण संस्था धारचूला शाखा के संरक्षक डॉ. जगमोहन सिंह गर्ब्याल ने केन्द्रीय कार्यकारिणी के दिनांक 13.05.2021 की बैठक में सुझाव दिया था कि रं राजू के गरीब लोगों को भी कोविड के दौरान संस्था की ओर से राशन पहुंचाया जाना चाहिए। इस सुझाव पर संस्था के भूतपूर्व महासचिव श्री महीराज सिंह ह्यांकी व रं कल्याण संस्था ने व्यापक रूप से सदस्यों से अपील की तो कम ही समय में 27 लोगों ने दिनांक 05.06.2021 से लेकर 16.06.2024 तक संस्था के राहत कोष में ₹ 3,64,594,00 (₹ सताईस हजार दस रूपये मात्र) जमा कराये। कोरोना की ऐसी विकट स्थिति को देखते हुए केन्द्रीय कार्यकारिणी के संरक्षक व केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री बिशन सिंह बोनाल ने सोशल मीडिया में इस नेक कार्य को तत्काल ही सम्पन्न करने हेतु रं कल्याण संस्था शाखा धारचूला से कोरोना योद्धाओं की टीम गठित कर गाँवों में कठिनाई से जीवन यापन कर रहे गरीब वर्ग के लोगों को दो वक्त का राशन किट उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध किया।
- रं कल्याण संस्था शाखा धारचूला के अध्यक्ष श्री देव कृष्ण फकलियाल व शाखा सचिव श्री राम सिंह ह्यांकी व उनकी टीम ने चारों घाटी (दारमा, व्यास, चौंदास व रालमपातो) के रं समुदाय के गरीब वर्ग के लोगों की अन्य योजना के तहत लिस्ट तैयार करते समय 344 परिवारों को चुना। इस अन्न योजना के तहत एकत्रित धनराशि से दाल–चावल, तेल–नमक, चीनी–चायपत्ती, नहाने–धोने का साबुन, माचिस इत्यादि सामग्री का बैग दो हफ्ते के अन्दर ही तैयार कराया गया। इस तैयारी में सभी कोरोना योद्धाओं के भोजन व नाश्ता हेतु करीब ₹ 8,000.00 (₹ आठ हजार मात्र) व्यय हुआ। इस अन्न योजना के बैग को तैयार करने में धारचूला की टीम में नैसर्स शंकर सिंह कुटियाल (दुकानदार धारचूला) से ₹ 2,53,825.00 (₹ दो लाख तिरपन हजार आठ सौ पच्चीस मात्र) का सामग्री खरीदी गयी जिसका भुगतान दिनांक 02.08.2021 को रं राहत कोष से सीधे मैसर्स शंकर सिंह कुटियाल (दुकानदार धारचूला) को ट्रसंफर कर दिया गया और अन्न किट के लिए ₹ 3,500.00 (₹ तीन हजार पांच सौ मात्र) की 350 थैलियां पिथौरागढ़ से मंगायी गयी।

- माह जून, 2021 में अन्न किट को वितरित करते–करते बरसात के मौसम की वजह से कई जगह भारी बरसात के फलस्वरूप दारमा, व्यास, चौंदास व रालमपातो की तरफ के आवागमन के सभी मार्ग अवरूद्ध हो गये और अन्न किट जो धारचूला शाखा के कोरोना योद्धाओं के द्वारा मिलजुलकर तैयार की गयी थी, को दूर–दराज के गांवों तक मार्ग खुल न पाने के कारण नहीं पहुंचाया जा सका। धारचूला क्षेत्र के दारमा, जौलजीबी से लेकर धारचूला में रहने वाले करीब 140 गरीब परिवारों को लिस्ट अनुसार अन्न किट वितरित कर दिए गए और शेष परिवारों को कुछ दिनों बाद अवरूद्ध मार्ग खुल जाने के बाद गांव–गांव जाकर वितरित किए गए। जिन जरूरतमंद लोगों को अन्न किट प्राप्त नहीं हो पायी थी उन्हें दूसरे चरण में ₹ 2,825.00 (₹ बारह हजार आठ सौ पच्चीस मात्र) का राशन खरीद कर अन्न किट बनाकर रालमपातो में भी पहुंचाया गया। अन्न किट व कोरोना के मेडिकल किट को गांव–गांव पहुंचाने (ट्रांसपोर्टेशन) हेतु रं राहत कोष से भी ₹ 50,000.00 (₹ पचास हजार मात्र) शाखा धारचूला को खाते में भेजा गया। जिन कोरोना योद्धाओं ने अन्न किट व मेडिकल किट को हर गांव के हर गरीब वर्ग के लोगों तक उपलब्ध कराया उन सभी के निस्वार्थ भावना से किए गए परिश्रम को देखते हुए केन्द्रीय कार्यकारिणी ने 19 कोरोना योद्धाओं को दो–दो हजार रूपये के इनाम देने की घोषणा की। 19 कोरोना योद्धाओं को रं कल्याण संस्था शाखा धारचूला द्वारा 15 अगस्त, 2021 को झण्डारोहण के अवसर पर दो–दो हजार रूपये के चैक प्रदान किए। दिनांक 08.08.2021 को केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक में अन्न योजना के तहत अन्न किट के खर्चे का ब्यौरा व मेडिकल किट बनाने में खर्चे का ब्यौरा महासचिव द्वारा प्रस्तुत किया गया और केन्द्रीय कार्यकारिणी द्वारा संस्तुति करने के पश्चात् सभी सदस्यों ने अनुमोदन प्रदान किया।

(iii) कोरोना संक्रमित व्यक्तियों के लिए प्रवास एवं आक्सीजन कंसट्रेटर की व्यवस्था :

चूँकि जब मरीजों को गंभीर अवस्था में पिथौरागढ़ और हल्द्वानी रेफर किया जा रहा था तो ऐसे में कभी–कभी मरीजों को अस्पतालों में बेड नहीं मिल पा रहे थे। ऐसी स्थिति में, संस्था ने निर्णय लिया कि पिथौरागढ़ व हल्द्वानी में स्थित मिल घर (रं मं बं/रं चिम) में इस तरह के मरीजों और सहायकों के रहने की व्यवस्था की जाय। इन दोनों जगहों पर मरीजों को अन्तरिम सहायता के लिए आक्सीजन कंसट्रेटर की व्यवस्था करने का भी निर्णय लिया गया। कार्यक्रम में कई आक्सीजन कंसट्रेटर की व्यवस्था कुमायूँ कमिश्नर श्री अरविन्द सिंह ह्यांकी एवं जिलाधिकारी नैनीताल श्री धीराज सिंह गर्ब्याल के सौजन्य से कराकर उन्हें रं मं बं में मरीजों के लिए उपलब्ध कराया गया।

(6) 'रं शिक्षा कोष' का संचालन।

- 'रं शिक्षा कोष का गठन रं समाज के मेधावी छात्र–छात्राओं को पुरस्कार/छात्रवृत्ति दिए जाने के उद्देश्य से किया गया है।
- इस कोष हेतु सुश्री गंगोत्री गुंज्याल द्वारा **₹** 1.00 लाख, श्री महिमन सिंह गुंज्याल द्वारा **₹** 1.00 लाख, श्री कृष्ण सिंह रौतेला द्वारा **₹** 5,500.00, श्री पूरन सिंह सेलाल द्वारा **₹** 5,000.00 तथा दारमा सेवा समिति द्वारा **₹** 55,000.00 योगदान राशि दी गयी।
- इस कोष के सापेक्ष संस्था द्वारा लिए गए निर्णयानुसार जी.आई.सी., पांगू में प्रथम श्रेणी में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्र–छात्राओं को **₹** 2,000.00 प्रत्येक को पुरस्कार/छात्रवृत्ति राशि तथा जी.आई.सी./जी.जी.आई.सी., धारचूला के हाईस्कूल एवं इण्टर में टॉप करने वाले छात्र–छात्राओं को स्व. अर्जुन सिंह गुंज्याल की स्मृति में पुरस्कार/छात्रवृत्ति **₹** 5,000.00 प्रत्येक दी जाती रही है।
- उक्त के अतिरिक्त श्री कृष्ण सिंह रौंतेला एवं उनके भाईयों की ओर से स्व0 केशर सिंह रौंतेला एवं स्व0 कमली देवी एकेडेमिक एक्सीलेंस अवार्ड के रूप में ब्लॉक धारचूला के अन्तर्गत हाईस्कूल एवं इण्टर में टॉप करने वाले एक–एक छात्र/छात्रा को **₹** 2,500.00 प्रत्येक पुरस्कार/छात्रवृत्ति राशि दी जाती रही है।